शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

निराला के गीतिकाव्य पर एक महत्त्वपूर्ण शोध प्रकाशन

डॉ० राकेश शुक्ल

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज, कानपुर-208 002

www.shodh.net

निराला के गीतिकाव्य पर एक महत्त्वपूर्ण शोध प्रकाशन

डॉ० राकेश शुक्ल

हिन्दी कविता में निराला का आगमन एक युगान्तरकारी घटना है। एक ओर वे छन्दमुक्त कविता के लिए प्रस्थानबिन्दु बने तो दूसरी ओर उनके सृजन में नवीन गीतात्मक चेतना का उदय हुआ। नए छन्द, नई शब्द योजना, नए विषय नई अभिव्यक्ति से अलंकृत उनके गीतों ने नवगीत विधा का भी पथ प्रशस्त किया। निराला का साहित्य बहुविध एवं व्यापक है पर उनके सिर्फ गीतिकाव्य को लेकर एक महत्वपूर्ण शोध कार्य डॉ0 साधना शुक्ला ने किया है। इस शोध कार्य को एक अभिधा दी गई है, 'हिन्दी गीतिकाव्य के संदर्भ में महाकवि निराला के गीतों का मूल्यांकन।' यह शोध प्रबन्ध कानपुर विश्वविद्यालय से पी-एच0डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत किया गया था जो अब सारंग प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित है। इस पुस्तक में डॉ0 साधना ने महाकवि निराला के अद्यतन प्राप्त छह सौ छियासी गीतों की सम्पदा को अपने अध्ययन का आधार बनाया है।

प्रस्तुत शोध कार्य छह अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में हिन्दी गीतिकाव्य की परिभाषा एवं स्वरूप को स्पष्ट करते हुए वैदिक मंत्र गीति से लेकर संस्कृत काव्य में गीति तत्व विशेषत: जयदेव के गीत गोविन्द तक की गीतिकाव्य परम्परा का उल्लेख किया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी गीतिकाव्य की परम्परा का विस्तार से विवेचन है जिसमें आदिकाल से लेकर आधुनिक काल में प्रयोगवाद और परवर्ती गीतिकाव्य की यात्रा का विश्लेषण किया गया है। तृतीय अध्याय डॉ0 साधना शुक्ला के अनुसंधान का मूल प्रतिपाद्य है जिसमें निराला के गीतों का विस्तार के साथ विवेचन हुआ है। चतुर्थ अध्याय में निराला के गीतों में सांस्कृतिक चेतना के विकास को दर्शाया गया है। पंचम अध्याय में उनके गीतिकाव्य का शिल्प पक्ष, षष्टम अध्याय में निराला जी के गीतों का सैद्धान्तिक मूल्यांकन तथा सप्तम अध्याय उपसंहार के अन्तर्गत अनुसंधानकर्ता ने अपने शोध कार्य के निष्कर्षों एवं उपलब्धियों से हमें अवगत कराया है। डॉ0 साधना शुक्ला के शब्दों में ''निराला जी की काव्य साधना चालीस वर्षों की समयावधि को अपने अन्तर में समेटे 686 गीतों का सृजन करती है। इस समयावधि में निराला जी ने दर्शन, अध्यात्म, भक्ति, इतिहास, पुराण, प्रकृति, समाज, देश, नारी, प्रेम, सौन्दर्य तथा मानव संवेदना आदि विविध विषयों को अपनी लेखनी का विषय बनाया जिसमें अपने गीतिकाव्य को नवीन पद्धति, नवीन शैली तथा भाषा की नवीनता के साथ नूतन उद्भावनाओं से जीवंत बनाया है।'' निराला का सृजन कालजयी है। इसलिए उनके साहित्य को युगविशेष/काल विशेष में बाँधना ठीक नहीं है उनकी कविता से आज के रचनाकारों को भी साहित्य की जीवन शक्ति प्राप्त होती है।

अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज तथा सान्ध्यकाकली काव्य संग्रहों में गीति सृष्टि के प्रति उनका अपार आकर्षण और अनुराग दिखाई देता है। गीति के विषय में निराला ने स्वयं लिखा है कि, ''गीति सृष्टि शाश्वत है। समस्त शब्दों का मूल कारण ध्वनिमय ओंकार है। इसी अशब्द संगीत से स्वर सप्तकों की भी सृष्टि हुई है। समस्त विश्व स्वर का ही पूँजीभूत रूप है, अलग-अलग व्यष्टि में स्वर-विशेष व्यक्ति या मौन।'' (गीतिका की भूमिका-निराला, पृ0 407) डॉ0 साधना शुक्ला ने निराला के गीतों की विशिष्टता बतलाते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि ''गीति सृष्टि की शाश्वतता का स्वर निराला जी के काव्य में निरन्तर विद्यमान है। इन गीतों में प्रेम, सौन्दर्य, श्रृंगार के शाश्वत विषय हैं। प्रकृति के विविध चित्रों की कल्पनामयी भास्वरता है। इनमें यदि श्रृंगारिकता है तो नारी और प्रकृति की अनुरागमयी सौन्दर्य का सघन चित्रण है। विनय और प्रार्थना के गीत हैं तो दार्शनिकता भी है। जीवन की कटु अनुभूतियाँ हैं तो प्रेम का कोमलतम राग भी। यदि इन गीतों में ओज ओर पौरुष है तो संगीत का सुमधुर स्वर भी है।'' डॉ0 साधना ने निराला के गीतों में मौलिक तत्त्वों का विश्लेषण करते हुए उनके गीतों का वर्गीकरण भी किया है जिनमें विषय के आधार पर व्यष्टिगत गीत, समष्टिगत गीत, प्रार्थना गीत, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक गीत, प्रेम और सौन्दर्य के गीत, प्रकृति चित्रण सम्बन्धी गीत, राष्ट्रीय चेतना सम्बन्धी गीत, व्यवस्था की विसंगतियों के विरुद्ध व्यंगात्मक गीतों तथा प्रशस्तिपरक गीतों की सोदाहरण विवेचना की है। स्वरूप के आधार पर सम्बोधिगीति, शोकगीति, पत्रगीति, गीतिनाट्य तथा आख्यानक गीति (बैलेड) यथा 'राम की शक्ति पूजा',

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

निराला के गीतिकाव्य पर एक महत्त्वपूर्ण शोध प्रकाशन

डॉ० राकेश शुक्ल

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वी०एस०एस०डी० कालेज, कानपुर-208 002

www.shodh.net

'तुलसीदास' आदि का विस्तार के साथ विवेचन, विश्लेषण किया है। विषय विश्लेषण के क्रम में लेखिका ने निराला की गीति सम्पदा के विकास क्रम को भी दर्शाया है। आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी ने निराला की गीति-सृष्टि का मूल्यांकन करते हुए यह लिखा था कि ''हिन्दी कविता को गीति के माध्यम से निराला ने ऐसा विशिष्ट कृतित्व दिया जिसके जोड़ का साहित्य हिन्दी में नहीं है।'' (कवि निराला-आ0 नन्द दुलारे वाजपेयी-पृ0 197) आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी के इस कथन को प्रमाणित करने के लिए डॉ0 साधना शुक्ला का यह शोधकार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

निराला के गीतों की सांस्कृतिक चेतना के प्रतिपादन की दृष्टि से भी यह शोध ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। जिसमें उनकी मूल्य चेतना/मानवीय मूल्य, सामाजिक मान्यताएँ, राजनैतिक/राष्ट्रीय आदर्श, आध्यात्मिक, दार्शनिक चिन्तन, तथा सौन्दर्य योजना सभी कुछ समाहित हैं। निराला के गीति सृष्टि के शैल्पिक उपकरणों पर भी अनुसंधानकर्ता ने विस्तारपूर्वक विचार किया है। उनकी काव्य शैली, प्रसाधन भंगिमा, नूतन शब्द सामर्थ्य की क्षमता, छन्द विधान, प्रतीक योजना, बिम्ब योजना, अप्रस्तुत विधान, अलंकार योजना तथा शब्द शक्तियों का विस्तार से अध्ययन किया गया है।

निराला गीतों के सैद्धान्तिक मूल्यांकन में वैयक्तिकता, भावप्रवणता, संगीतात्मकता, तथा चित्रत्मकता की दृष्टि से उनके गीतों का अध्ययन इस शोधकार्य को और अधिक मूल्यवान बनाता है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि डॉ0 साधना शुक्ला ने इस विषय पर जिस तरह व्यापक अध्ययन और परिश्रम किया है वह निराला की गीति-सृष्टि को समझने के लिए शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा समस्त साहित्य प्रेमियों के लिए बहुमूल्य एवं उपयोगी हैं।

पुस्तक - **हिन्दी गीतिकाव्य के सन्दर्भ महाकवि निराला के गीतों का मूल्यांकन**
शोधकर्ता - **डॉ० साधना शुक्ला**
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी०एन० कालेज, फतेहगढ़
शोध निदेशिका - **डॉ० विद्या चौहान**
कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर से उपाधि वर्ष १९९१
प्रकाशन - **सारंग प्रकाशन, मथुरा (उ०प्र०)**
पृ०सं० - **४७९**
मूल्य - **रू० ४५०/-**

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN